IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

क्वीर सफलता की गाथा . पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन

अरुण॰ पी[1]

शोध छात्र॰भाषा विभाग॰ एस. एस. एल॰ वी. आई. टी॰ वेल्लोर॰ तमिलनाडू .632014

डॉ॰ के॰ जयलक्ष्मी[2]

सह आचार्या॰भाषा विभाग॰ एस. एस. एल॰ वी. आई. टी ॰ वेल्लोर॰ तमिलनाडू – 632014

सार:. एक ट्रांसजेंडर की अपनी पहचान को परिभाषित करने और उपलब्धि के नए मानक स्थापित करने की असाधारण और साहसी यात्रा है "पुरुष तन में फंसा मेरा नारी मन" जो अंग्रेजी में रचित "दी गिफ्ट ऑफ गोड्डेस्स लक्ष्मी" का हिन्दी अनुवाद है। मानोबी एक पुरुष से एक महिला में अपने परिवर्तन की मार्मिक कहानी बताती है कि कैसे उन्होंने गंभीर उथल-पुथल के बावजूद अपनी पढ़ाई जारी रखी और लड़कियों के कॉलेज की पहली ट्रांसजेंडर प्रिंसिपल बनीं। और ऐसा करते हुए उन्होंने न केवल अपनी पहचान परिभाषित की॰ बल्कि अपने पूरे समुदाय को भी प्रेरित और ऊर्जित किया।

मूल शब्द:. ट्रांसजेंडेर प्रिंसिपल, मनोबि बंद्योपाध्याय, ट्रांसजेंडेर का जीत, पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन।

भूमिका:. मनुष्य के जीवन परिस्थितियाँ ही हैं जो एक मनुष्य को दूसरे से अलग करती हैं। उन परिस्थितियाँ से क्वीर को इससे बाहर रखा गया है। ज़िन्दगी में मानवता धर्म, जाति और रंग के आधार पर बंटी हुई समय में कई लोग ऐसे भी भावनात्मक और शारीरिक रूप से बंटे हुए हैं। उन्हें आज तक हमारे समाज में स्वीकार और समझा भी नहीं गया है। वे हैं ट्रांसजेंडर। ट्रांसजेंडर पर रचित साहित्य चाहे वह किसी भी भाषा साहित्य विधा में हो उनके जीवन और व्यवहार, दर्द, पीड़ा और अपमान से भरा हुआ है। वे हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो अपने सफलता के माध्यम से आज इस समाज में दूसरों के तरह ही हैं। समाज में बहिष्कृत इन लोगों के उपलब्धि समय से परे पहचाना हो जाता है और एक स्मारक के रूप में बना रहता है।

मानोबी का जन्म 23 सितंबर, 1964 को एक मध्यमवर्गीय परिवार में सबसे छोटे बेटे सोमनाथ बंद्योपाध्याय के नाम से हुआ था। ये मानते हुए कि लड़के के जन्म से धन और समृद्धि आएगी, उनके रिश्तेदार और पड़ोसी उन्हें देवी लक्ष्मी के रूप में उसे मानते हैं, जो बाद में उसके जीवन में यौन परिवर्तन को प्रकट करता है। सोमनाथ एक लड़का था जो बहुत मेहनती और स्कूल में टॉपर है। बचपन से ही उसे अपनी मनचाही काया पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। मानोबी की शिक्षा नैहाटी के ऋषि बंकिम चंद्र कॉलेज में हुई। उन्होंने जादवपुर विश्वविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई की। मानोबी आत्म-पहचान, पुरुष से महिला में परिवर्तन और हर दिन उनके द्वारा सामना किए जाने वाले संघर्षों के बारे में, उनकी यात्रा का वर्णन अपनी इस किताब में करती है। वह अपने शिक्षाविदों में उत्कृष्टता प्राप्त करती हैं।

एक किशोरी के रूप में उसे दूसरों से मौखिक अपमान और शारीरिक हमले का सामना करना पड़ता है। उसके चचेरे भाई और पड़ोसी उसका यौन शोषण करते हैं। "मेरा एक इक्कीस साल का लंबा–चौड़ा कज़िन था और अपनी हवस मिटाने केलिएए काफी समय से मुझ पर नज़रे जमाए हुआ था। मुझे तब तक इस बात का एहसास नहीं हुआए जब तक एक दिन मुझे अकेला पाकर उस बड़े से घर के वीरान भूतल केए खाली कमरे में नहीं ले गया। उसने वहीं मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाए। जब तक उसने मेरे साथ गुदा मैथुन नहीं कियाए तब तक मुझे कुछ पता नहीं था कि क्या होने वाला था" (पृ-16)। उसके कई पुरुषों के साथ संबंध है जो मात्रा यौन सुख के लिए उसका इस्तेमाल करते हैं और बाद में उसकी उपेक्षा करने लगे। "जैसे कि मैंने पहले भी कहा कि मैं इन प्रकरणों से आजिज़ आने लगी थी और अपनेलिए एक स्थायी संबंध चाहती थी जो मेरी आत्मा को उन्नत बना सकेश (पृ-46) वे मानोबी के ट्रांस भावना के कारण उसे पसंद नहीं करते थे और उसे खारिज हो जाती है। हालांकि उसे नकार दिया जाता है। लेकिन, उसे भविष्य की आशा है और वह अपने भविष्य के प्रयासों की ओर बढ़ती है। बचपन में ही सोमनाथ अपने अंदर की लड़की की पहचान कर लेता है। "मैं अपनी बहनों के से जननांग चाहती थीश(पृ-15)। सोमनाथ होने के नाते वह अपनी बहन की प्रिंटेड फ्रॉक पहनती है, काजल और लिप स्टिक का इस्तेमाल करती है।

सोमनाथ का मानोबी में परिवर्तन की प्रक्रिया में संघर्षों का सामना करना पड़ता है। वे अपना लिंग बदलना चाहती हैं क्योंकि वह समलैंगिक के रूप में पहचान नहीं चाहती हैं। शिक्षा और दयालु लोगों की मदद के कारण मानोबी समाज में अपनी पहचान बनाती हैं। शिक्षा मानोबी को वह रूप देती है जिसमें वह आज अपनी पहचान बना पाई है। वे बताते हैं, "मैंने भगवान से पूछा कि उन्होंने मुझे ऐसा क्यों बनाया है? मैंने इस कर्म के लायक क्या किया है। आखिरकार मुझे शांति महसूस हुई" (पृ-122)। अपने आत्मसम्मान और आस्मिता के लिए लंबे संघर्ष के बाद सब कुछ इसे ईश्वर के हाथों में छोड़ देती है। मानोबी हर बार अपने दिल में महसूस करती हैं कि "मैं अक्सर कल्पना करती कि मैं दुल्हन हूँ और मेरा वर पहली बार नेह भरी दुष्टि से मुझे निहार हैष ;पृ.18द्ध। जब वह अपने शरीर में वक्र पाती है, तो उसे लगता है कि उसकी आत्मा को वह शरीर मिल गया है जिसे वह लंबे समय से नकार रही थी "मैं बहुत कष्ट में हूँ क्योंकि मैं अपनी पुरुष देह की इस यौन कैद से बाहर आकरए अपने स्त्री रूप व आत्मा को पाना चाहती हूँष ;पृ.54द्ध। मानोबी से इस दोहरा मन में जी नहीं सकती है। इसे कहकर रोनी लगी। वे हमसे एक प्रश्न पूछती हैं कि "हमारा भगवान कौन है? कौन है हमें रक्षा करने वालाछ उनके मन

में इसका भी कोई उत्तर नहीं मिला। उन्हें अहसास हो गया कि शिक्षा ही हमें बचाएगी हमारी मदद करने कोई नहीं आएंगे। वे कहती हैं कि ष्पढ़ाई ही है हमारी मुक्ति का रास्ताष्। इसलिए मानोबी पढ़ाई में ध्यान देकर जीवन में आगे बढ़ने लगी। वह हमेशा पढ़ना चाहती थी इस लिए मानोबी ने आगे पढ़ने के लिए शुरू किया। "शिक्षा के प्रति प्रेमए मेरा पहला प्रेम था और वही इस दौड़ में जीत गयाश (पृ-48द्ध।

इससे उसे अपने समुदाय का प्रतिनिधित्व करने में मदद मिलती है। सोमनाथ होने के नाते वह एक महिला बनना चाहती है और स्त्री जीवन चाहता है। सोमनाथ पुरुष के शरीर में फंसी महिला की तरह महसूस करता है। रजस्वला होने की उत्कंठा में वह उन कपड़ों की पट्टियों को जानना चाहता है, जिन्हें एकांत में धोया और सुखाया जाता है। अपनी निजता में वह एक समान सैनिटरी नैपकिन बनाती हैं और नकली मासिक धर्म के लिए अपने जननांगों के चारों ओर बाँधती है। सोमनाथ के रूप में, उसे अपने शरीर और उस शरीर के बीच संघर्ष करना पड़ता है जो वह पाना चाहती थी। मानोबी का मनोवैज्ञानिक रूप यहाँ प्रकट है। इसका मुख्य कारण है लोगों का व्यवहार जो उसे आहत करता है। लोग उसके सीने पर पेपरवेट फेंकते हैं और उसकी पोशाक के नीचे देखकर उसके शरीर के अंगों की जांच करते हैं। उसके आसपास के लोग मानोबी को एक सेक्स टॉय बनते हैं। तमाम संघर्षों के बीच वह अपनी ग्रेजुएशन की पढ़ाई के लिए आगे बढ़ती हैं।

शिक्षक बनने पर मानोबी को भेदभाव का सामना करना पड़ता है। उनके स्कूल के आस-पास के लोग उसे अलग-अलग पोशाक और उनके स्त्री स्वभाव में देखने के लिए आते हैं। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए नाचना और श्रृंगार करना काफी स्वाभाविक है, मानोबी मंजुश्री चाकी सरकार के नृत्य समूह में शामिल हो गई और वे अपने ट्रांसजेंडर दोस्त जगदीश को वहाँ डांस सिखाने के लिए नियुक्त करती हैं। वे छात्रों के बीच रचनात्मकता को बाहर लाने के लिए "अर्धनारीश्वर नाट्य संस्था" नृत्य मंडली शुरू करती हैं। शिक्षा उसे उन बाधाओं को तोड़ने में मदद करती हैं जिसे समाज ने उसके चारों ओर बनाई थी। मानोबी कहती हैं, "मैं जगदीश जैसे ट्रांसजेंडर की तुलना मेंए स्वयं को बहुत हद तक सौभाग्यशाली मानती हूं। अगर मेरे परिवार ने मेरे इस विचित्र रूप के बावजूद मुझे सहारा न दिया होताए मुझ पर पढ़ने का दबाव न रखा होता तो भगवान जाने मेरे साथ क्या हुआ होताश (पृ-70)।

अब अपनी उपलब्धियों के लिए जानी जाने वाली, वे अक्सर आश्चर्य करती हैं कि कैसे शिक्षा ने उनके स्वयं के जीवन और अन्य ट्रांसजेंडर के जीवन पथ के बीच एक स्पष्ट अंतर पैदा कर दिया है। वे अपने रास्ते पर सही चलती हैं और ऊंचाइयों तक पहुंचती है। यौन परिवर्तन के लिए तरसती मानोबी अपनी भावनाओं को मेडिकल की छात्रा इंद्रा से साझा करती हैं, जो उसे मनोचिकित्सक से मिलवाती है। सोमनाथ का स्त्री में बदलने की प्यास मिटती नहीं। सोमनाथ मैनक मुखोपाध्याय से मिलती है जो उसे प्रोत्साहित करता है। लिंग परिवर्तन करने के लिए और उसके पहले प्रयास के रूप में वे हार्मोनल उपचार और स्केलपेल थेरेपी का दुष्प्रभाव उसके स्वास्थ्य और उसके त्वचा पर दिखाई पड़ता है जिससे उसका काले मुँहासे हो जाते हैं।

अपनी स्कूल नौकरी के दौरान मानोबी समरजीत से मिलती है और दोनों के बीच सम्बन्ध शुरू हो जाता है लेकिन कुछ समय के बाद मानोबी समरजीत से धोखा खा जाती हैं। वे उसके खिलाफ न्यायालय में मामला दर्ज करती हैं। वे इस घटना से पूरी तरह टूट जाती है क्योंकि वे स्वभाव से धार्मिक और आशावादी होती हैं। वे एक ऐसे साथी के लिए तरसती है जिस पर वह अपना सिर टिका सके और हल्का महसूस कर सके। वह जाधवपुर

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रही हैं वे वहां स्वतंत्रता का आनंद लेती हैं क्योंकि वातावरण खुले विचारों वाले सामाजिक लोगों से भरा हुआ है। सबसे महान आधुनिकतावादी कवियों में से एक शंख घोष सेक्स चेंज ऑपरेशन करने के लिए उनका समर्थन करते हैं। वे उसे उच्चतम बौद्धिक आदान-प्रदान का लक्ष्य रखने और अपने मानसिक अवसाद से बाहर आने की सलाह देते हैं। मानोबी 125 रुपये के वेतन पर श्रीकृष्ण कॉलेज में अंशकालिक व्याख्याता के रूप में काम करती हैं। मानोबी को उसके बाद पटुलिया बॉयज स्कूल में अध्यापन का पद मिलता है। एम। फिल में दाखिला लेते हुए, वह प्रतिभा अग्रवाल के नाट्य शोध संस्थान में एक शोधकर्ता के रूप में काम करना शुरू करती हैं। सेक्स चेंज ऑपरेशन के पहले प्रयास में मनोबी ऑपरेशन थियेटर से बाहर आ गई। 2003 में मानोबी ने पर्याप्त पैसा इकट्ठा किया और सकारात्मकता के साथ ऑपरेशन करने के लिए कदम उठाए। डॉ खन्ना के इलाज से, वह सोमनाथ से एक ट्रांस महिला मनोबी में परिवर्तित हो जाती है। "और ऐसे प्रसंगों मेंए मेरा दिमाग दुविधा में उलझ जाता और यह संघर्ष मुझे भीतर ही भीतर चीर देता। क्या मैं सच में एक स्त्री हूं जो पुरुष की देह में कैद है या केवल भ्रामक विचार हैघ ऐसा क्यों है कि सारा संसार मुझे ऐसा पुरुष मानता है जो एक ज़नख़े से ज़्यादा नहीं है। श्;पृ-97)

स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस और शारदा देवी में उनका विश्वास उनके दर्द को ठीक करता है और उन्हें सभी संघर्षों से बाहर निकालता है। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग के रूप में घोषित किए जाने तक पहचान और आरक्षण प्राप्त करने के लिए पीड़ित होते हैं। सर्वोच्च न्यायालय का अप्रैल 2014 का फैसला, ट्रांसजेंडर लोगों को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता देना और संविधान के तहत उनके समान अधिकारों की रक्षा करना, एक अल्पमत का उपयोग करना, एक ऐतिहासिक निर्णय था। यह उन्हें अन्य, ट्रांसजेंडर और तीसरे लिंग के रूप में दस्तावेजों में मान्यता देता है। उनके पास अपना लिंग परिवर्तन करने का मौलिक अधिकार है। मानोबी के नाम परिवर्तन कभी भी मान्य नहीं था। उनके सभी शैक्षणिक प्रमाणपत्रों में सोमनाथ बंद्योपाध्याय का नाम है सिवाय उनकी डॉक्टरेट की डिग्री के, जो मानोबी बंद्योपाध्याय के नाम से है। कई वर्षों की वरिष्ठता खोकर वह राज्य के उच्च शिक्षा विभाग को आश्वस्त करती है कि सोमनाथ और मानोबी दोनों एक ही हैं।

स्व-पहचान की यात्रा की दिशा में, मानोबी स्वतंत्र रूप से भारत की पहली ट्रांसजेंडर पत्रिका "अबमनोब" प्रकाशित करती हैं जिसका अर्थ है समाज द्वारा ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को दी गई स्थिति, ट्रांसजेंडर्स के इंटरव्यू ट्रांसजेंडरों के स्वास्थ्य और स्वच्छता के मुद्दों पर प्रकाश डाल गया है, उनके रहने के माहौल, उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा, प्यार, सेक्स की पड़ताल करता है। खुद को साबित करने के लिए, वह पहली बंगाली महिला पत्रिका "मालिनी" में प्रकाशन के लिए लेख लिखना शुरू करती हैं। वे अपने बंगाली शिक्षक अरुणोदय भट्टाचार्य की मदद से पत्रकार बनने की अपनी इच्छा को प्रकट करती हैं। वे अपनी ड्रेसिंग स्टाइल को यूनिसेक्स कपड़ों से स्कार्फ और धूप के चश्मे जैसी एक्सेसरीज में बदलती हैं। जब वे आजकल में लिखती हैं तो लोग उनके साथ सम्मान से पेश आते हैं और इससे उन्हें रोमांच होता है। उसे लगता है कि शिक्षाविद उसके लिए सब कुछ लाते हैं।

कॉलेज में आवेदन पत्र भरते समय सोमनाथ लिंग के कॉलम में पुरुष को चिन्हित करती हैं। क्योंकि, ट्रांसजेंडर के लिए कोई विकल्प नहीं था। मानोबी बताती हैं "असंभव संभव हो गया थाश (पृ-157)। क्लब और संस्थाओं के लोगों ने उनका अभिनंदन किया जब मानोबी को पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा स्थापित ट्रांसजेंडर विकास बोर्ड का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। वे एल जी बी टि क्यू के समुदाय और मानवाधिकार संघर्ष का समर्थन करती हैं। कॉलेज प्रोफेसर के रूप में मानोबी का करियर कठिन था। उन्हें उन लोगों से निपटने में मुश्किल होती है जो उसकी कामुकता की ओर इशारा करते हैं और उस पर शारीरिक हमला करते हैं। जब वह नैहाटी के ऋषि बंकिम चंद्र कॉलेज में जाती है तो उसे अपमान का सामना करना पड़ता है। इसका एक उदहारण उनके इन वाक्यों में अभिव्यक्त होता है "मुझे देखने के लिए अच्छी. खासी भीड़ जुट गयी। कुछ लोग देखकर मारे उत्साह के ताली बजाने लोगेए कुछ सीटियाँ बजाते हुआ फब्तियाँ सी कसने लगे और चारों और से ताने सुनाई देने लगे" (पृ-43)। वे उनके निप्पलों को जोर से दबाते हैं और उसके बालों को खींचकर जांचते हैं कि यह असली है या विग। मानोबी कहती हैं "वे मुझे एकांत में देखते ही घेर लेतेए मेरे बाल और कपड़े नोचते और कहते कि वे देखना चाहते हैं कि मेरे बाल असली हैं या मैंने नकली बालों की विग लगा रखी हैद्य एक बारए उनमें से दो लोगों ने मुझे दीवार से सटा कर खड़ा

कर दिया। वे मुझे टोह कर यह देखना चाहते थे कि मेरे कपड़ों के नीचे क्या था। वे मुझे देख कर फुफकारे और इस दौरान मुझे अपना मुँह बंद रखने की चेतावनी दी। उन्होंने मेरी छातियों के निप्पल इतनी ज़ोर से दबाए कि मेरी कराह निकल गयी (पृ-85)। मानोबी ने अंतद्वंद में क्यों मेरे लिए ऐसे हो रहा है इसे सोचकर अपने मुँह बंदकर रोनी लगी। "उन्होंने मेरी केरियर तबाह करनी की धमकी दीए क्योंकि किसी हिजड़े को प्रोफेसर बनने का अधिकार नहीं थाश (पृ-84) जब वे दर्द से चिल्लाई तो उन्होंने उसका मुंह बंद कर दिया। तमाम कठिनाइयों के बावजूद वह अपने शिक्षण पेशे को अपनाती हैं। अन्य ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के विपरीत, मानोबी अपने परिवार के समर्थन के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करती हैं।

पहचान पाने की प्यास ने मानोबी को प्राचार्य पद के लिए आवेदन करने के लिए प्रेरित किया। सोलह साल के अनुभव के साथ, एक डॉक्टरेट की डिग्री और एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर वह राज्य विज्ञापन के जवाब में प्राचार्य पद के लिए आवेदन करती हैं। उनकी दो पुस्तकों के प्रकाशन और सैकड़ों अखबारों के लेख एपीआई स्कोर में अंक जोड़ते हैं। कामुकता को देखते हुए लोग मानते हैं कि मानोबी समाज में पहचान के लायक नहीं है लेकिन, वे अपनी पीएचडी पूरी करके उनके इन विचारों को तोड़ती हैं। एक ट्रांसजेंडर के रूप में वे यौन पहचान की समस्या का सामना करती हैं। उन्हें 2015 में कृष्णनगर महिला कॉलेज का प्रिंसिपल पद मिला। लोगों ने मानोबी को छेडा हैं, धोखा देते हैं, मजाक उड़ाते हैं और उसकी वृद्धि को हतोत्साहित करते हैं पर वे अपनी शैक्षणिक उपलब्धि से अन्य ट्रांसजेंडर लोगों से अलग यहाँ खड़ी होती है। वे कृष्णानगर महिला कॉलेज की प्रिंसिपल बनीं। जब वे भारत की पहली ट्रांसजेंडर प्रिंसिपल बन जाती हैं तो उसे अपने जीवन में जीत का एहसास होता है।

श्क्या तुम मैडम की बजाय मुझे ष्माँष कह सकते होष (पृ-148) मानोबी ने ष्देबाशीषष नाम के बच्चे को अडाप्ट किया। मानोबी वह है जो अपने स्वयं से ष्गर्भ के बिना मातृत्व धारणेवालेष बनी हुई। हर व्यक्ति के जीवन में भूलने के लिए एक एक कहानी होती है। मानोबी को भी है। एक दिन सोमनाथ से मानोबी तक उनका जीवन की यात्रा के बारे में सोचकर रोनी लगी। आंसू है जो कुछ सवालों के लिए उत्तर दे सकतेए कष्ट दे सकते हैए कुछ समय हमारे लिए उम्मीद भी दे सकती हो लेकिनए यह ही प्रथम बार एक ट्रांसजेंडेर का दर्दभर जीवन को बदलने के लिए जिम्मेदार हुआ। सोमनाथ से उनका जन्म हुआ है लेकिनए मानोबी से उनका जीवन नदी के जैसे बह रहा है। मानोबी कई लोगों के लिए एक रोल मॉडल के रूप में खासकर ट्रांसजेंडरों केलिए खड़ी हैं। एक बार तमिलनाडु के विधान सभा में पूर्व प्रमुख मुख्य मंत्री सिण्एनण अन्नादुरै ने कहा कि ष**ओरु तनिमनितनिन वेट्री अवनुडैय समुदायत्तिन वेट्री**ष **ष्जिस मनुष्य को जीत मिलता है वह जीत उनके समुदाय का जीत है**द्धष। मानोबी का जीत उनका जीत नहीं बल्कि उस महिला समुदाय के जीत है जो पुरुष तन से मुक्त होकर बाहर निकली है।

परिवार के समर्थन और शिक्षा के साथ सभी प्रतिबंधों से बाहर, वे प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि की दुनिया में प्रवेश करती हैं उसके जैसे बहुत कम लोग ही बाहर निकल पाते हैं और दुनिया में चमक पाते हैं। समाज को उन्हें समर्थन और अच्छी पहचान देनी चाहिए। उनका जीवन उन्हें बंदिशों से बाहर आने के लिए प्रेरित करता है। ट्रांसजेंडरों के प्रति भेदभाव खत्म होना चाहिए। समाज में उनका सम्मान और पहचान होनी चाहिए। जब तक हमारे मन में दोष है तब तक क़ीर वे विमूढ़ लोग हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूचिरू.

1ण मानोबी बंद्योपाध्यायए झिमली मुखर्जी पांडे . पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मनए राजपाल एण्ड सन्ज़ए दिल्लीए 2018